28.0 भारतीय ज्ञान परम्परा एवं आचार्य

- **शशि शेखर,** सहायक आचार्य बी 0एड0 विभाग शिवपति पी0जी0 कॉलेज, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर
Email-shyamu.mishra.75@gmail.com

शोध-सार

भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान का मूल आधार वेद, पुराण, उपनिषद, आरण्यक हैं। सम्पूर्ण वैदिक वांगमय, रामायण, महाभारत, स्मृतिग्रंथ, दर्शन, धर्मग्रन्थ, काव्य, नाटक, व्याकरण तथा ज्योतिष शास्त्र भारतीय ज्ञान परम्परा के अक्षय भण्डार हैं। जो भारतीय सभ्यता, संस्कृति के प्रसार में सहायक सिद्ध हुए हैं। बदलते सामाजिक परिवेश और मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना अत्यावश्यक है। यह समावेशी व्यवस्था भारतीय प्राचीन ज्ञान परम्परा को लिये बिना नहीं चल सकते है, क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता के दौर में सरपट भागे जा रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ संस्कृति, ज्ञान, विज्ञान को भूलते जा रहे हैं। इस अंधानुकरण में हमारी स्थिति कुछ ऐसी हो गयी है कि यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन हो तो लक्ष्य कैसे प्राप्त हो सकेगा। इस सम्प्रदाय के आलोक में नयी शिक्षा नीति में वैदिक आचार्यों के श्रेष्ठ शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं नैतिक गुणों को समावेशित करने हेतु विशेष बल दिया गया है। इस दिशा में नयी पीढ़ी को वैदिक आचार्यों के अनुशासनात्मक नैतिक जीवन से जोड़ने के लिये वर्तमान शिक्षा नीति ने अभिनव पहल की है। इसके अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के ऐसे सम्प्रत्ययों को जोड़ा गया है। जिससे आधुनिक आचार्यों में गौरवबोध जागृत हो सके।

मुख्य शब्द- *वैदिक सनातन ज्ञान, ज्ञान परम्परा, वैदिक आचार्य, शिक्षा प्रणाली*

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रकाश पुंज है, जिससे मानव की समस्त शक्तियों का स्वाभाविक एवं सामंजस्यपूर्ण विकास होता है। वैदिक काल में शिक्षा ज्ञान का पर्याय समझी जाती थी। ज्ञानात्मक चिन्तन का बीजारोपण वेदभूमि भारत में हुआ था, क्योंकि सृष्टि के ज्ञान चक्षु वेदों का प्रादुर्भाव इसी आर्य भूमि में हुआ था। वेद मानव सभ्यता के सबसे प्राचीन लिखित दस्तावेज हैं। इन्हीं वेद, पुराण, आरण्यक, उपनिषदों से भारतीय ज्ञान परम्परा का उदय हुआ, जो वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के लिए पथ प्रदर्शक है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा गुरूकुलों में गुरूओं, आचार्यों, ऋषियों के मुखारविन्द से पुष्पित व पल्लवित होकर बौद्ध, जैन, मुस्लिम व अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के समानांतर आगे बढ़ी व वर्तमान तक का सफर तय कर चुकी है। हमारी वेदमार्गी ज्ञान परम्परा वैदिक आश्रमों से मौखिक रूप से आगे बढ़ाई गयी। गुरू आश्रमों में आचार्यों का स्थान सर्वोपरि था। वैदिक शिक्षा में आचार्यों को गुरू कहा जाता था। गुरू या आचार्य की उत्कृष्टता उच्चता का बोध संस्कृत का यह श्लोक कराता है-

गुकारस्त्वन्धकारस्तु रूकार स्तेज उच्यते।
अन्धकार निरोधत्वात् गुरूरित्यभिधीयते।।

अर्थात् 'गुकार' यानि अन्धकार और 'रू' कार यानि तेज, जो अन्धकार का (ज्ञान का प्रकाश देकर) निरोध करता है, वही गुरू कहा जाता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा:- प्राचीन गौरवमयी भारतीय ज्ञान परम्परा सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करने वाली है। प्राचीन भारतीय कला के साक्ष्य चारों वेद, वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर रामायण एवं श्रीमद्भगवद् गीता में विद्यमान हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा जो वैदिक एवं उपनिषद काल में थी, वह बौद्ध, जैन एवं मुस्लिम काल में भी रही। इसके अन्तर्गत महान गुरू-शिष्य परम्परा के माध्यम से अनेकों वर्षों तक अर्जित ज्ञान को आत्मसात व विश्लेषित कर नये ज्ञान को संश्लेषित किया गया। वेद कालीन ज्ञान प्रणालियां, परम्पराएं एवं प्रथाएँ मानवता को प्रोत्साहित करती थी। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान एवं विदेशों से आ रहे तथा-कथित नवीन अनुसंधान जो हमारे ग्रन्थों में पूर्व से ही उल्लेखित हैं, वह सब भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्धशाली होने का

प्रमाण हैं। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान परिदृश्य में और भी अधिक प्रासंगिक है। जो व्यक्ति को कर्तव्य-बोध, कर्तव्यपरायणता, स्थिरता इत्यादि के समायोजन हेतु व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ विविध ज्ञान-विज्ञान लौकिक एवं पारलौकिक रहस्यों को समझाने के लिये परिशुद्ध अनुदेशन का कार्य करती है। भारतीय ज्ञान परम्परा में व्यावहारिक मार्गदर्शन व अनुदेशन का कार्य आचार्य करते रहे हैं, जिससे उत्तम अनुशासन स्थापित होता था। अब समय है कि वैदिक ज्ञान परम्परा में आचार्य, ऋषि-मुनियों द्वारा दिये गये ज्ञान का संवर्धन करने तथा उस ज्ञान से भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक को अभिसिंचित करने का, जिससे भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान का समावेशन वर्तमान में हो सके।

वैदिक ज्ञान परम्परा में आचार्य:- वैदिक शिक्षा भारतीय ज्ञान परम्परा की पूरक है। वैदिक कालीन शिक्षा ऋषियों-मुनियों, गुरूजनों, आचार्यों की छत्रछाया में ही पल्लवित हुई थी, जिसमें आचार्यों की कठोर साधना के पद चिन्ह दिखाई देते हैं। वैदिक कालीन शिक्षा में आचार्यगण मूल संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिये प्रयास करते थे। जिसके लिए उन्होंने वैदिक साहित्य, दर्शन, व्याकरण आदि के अध्ययन पर जोर दिया। ''यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म'' के मतानुसार कार्यानुभव पर विशेष बल दिया जाता था। शिष्यों के नैतिक उत्थान के लिए आध्यात्मिक वातावरण का सृजन वैदिक आचार्यों की प्रमुख विशेषता रही है, जिसके लिए उन्होंने शिक्षण अभ्यास प्रक्रिया में यज्ञ अनुष्ठान का समावेश किया। वैदिक आचार्य समस्त मानव जाति को एक माला में गुम्फित कर आपसी सौहार्द का पाठ पढ़ाते थे। जिसके लिए उन्होंने परमपिता परमेश्वर से सभी जनों के सुखी व निरोगी होने की प्रार्थना विभिन्न श्लोकों में की है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग् भवेत्।।

अर्थात सभी सुखी होवं, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलकामना के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

वैदिक ज्ञान परम्परा में आचार्य को परम शांति दाता स्वीकार किया गया है। तत्समय ऐसा मत था कि बिना गुरू के परम शांति नहीं मिलती है।

किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्र कोटि शतेन च।
दुर्लभा चित्त विभ्रान्तिः विना गुरूकृपां परम्।।
अर्थात ''बहुत कहने से क्या ? करोड़ों शास्त्रों से भी क्या ?
चित की परमशांति, गुरू के बिना मिलना दुर्लभ है।''

वैदिक कालीन आचार्यों का आदर्श जीवन भारतीय ज्ञान परम्परा की अमूल्य निधि है, जो कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के लिए मील का पत्थर साबित होगी। वैदिक आचार्यों के आदर्श जो वर्तमान आचार्यों के लिए ग्रहणीय व आत्मसात करने योग्य हैं-

1. आदर्श जीवन शैली- वैदिक आचार्यों की जीवन शैली कठोर नियमों से आबद्ध थी। सूर्योदय से पूर्व बिस्तर त्याग से लेकर यौगिक साधना, यज्ञ-अनुष्ठान, कर्मकाण्ड आदि करना तथा इसके पश्चात शिक्षण अभ्यास उनकी दिनचर्या की प्रमुख विशेषता थी। ''योगचितवृत्ति निरोधः'' के मतानुसार वैदिक आचार्य चित्त की वृतियों के निरोध के लिये योग को महत्व देते थे।

2. आचरण की शुद्धता- वैदिक आचार्यों ने स्थूल शारीरिक शक्ति तथा सूक्ष्म आत्मशक्ति को सत्कार्य में प्रवृत्त करने हेतु चोरी न करना, सुरा पान न करना, झूठ न बोलना, दुराचार न करना इत्यादि मर्यादाओं के अनुरूप मानव आचरण करने का आदर्श अपने शिष्यों के सम्मुख प्रस्तुत किया।

3. अनुशासनात्मक जीवन- ''सत्यं वद धर्मं चर स्वाध्यान्मा प्रमदः।'' सत्यनिष्ठ अभिव्यक्ति, धर्माचरण के अनुरूप आचार-विचार तथा व्यवहार के साथ-साथ अध्ययन के प्रति निश्छल भाव ही वैदिक आचार्यों का प्रमुख गुण था। जिसमें अनुशासनात्मक जीवन पद्धति के बीज अंकुरित होते थे।

4. भेदभाव रहित अध्यापन-वैदिक कालीन शिक्षा में आचार्य स्त्री व पुरूष में विभेद न करते हुये शिक्षा प्रदान करते थे। मनुस्मृति में लिखा है कि हर कोई अपने लड़के व लड़कियों को गुरूकुलों में भेजें, किसी को शिक्षा से वंचित न रखें। उत्तररामचरितम् में महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में लव-कुश के साथ आत्रेयी के शिक्षा ग्रहण करने का उल्लेख मिलता है।

5. आदर्शवादिता-वैदिक आचार्यों का आदर्शवादी जीवन वर्तमान आचार्यों के लिए मूल सिद्धान्त के रूप में ले सकते हैं। उनके जीवन का मूल आधार चरित्र निर्माण तथा उच्च विचार था। ''योगः कर्मसु कौशलम्।'' के अनुसार अपने कार्य की कुशलता के लिए योग पर बल देते थे।

6. स्वतंत्र शिक्षण-वैदिक कालीन ज्ञान परम्परा में आचार्य स्वतंत्र व दण्ड रहित शिक्षा प्रदान करते थे। वैदिक ज्ञान परंपरा में राजाओं व अभिभावकों का कोई हस्तक्षेप नहीं था। गुरू ही पिता, अभिभावक व मार्गदर्शक था। शिष्य गुरू को पिता तुल्य मानते थे, जिससे शिक्षण स्वतंत्र रूप से होता था।

निष्कर्ष

शिक्षा मनुष्य को न केवल संस्कारवान बनाती है, बल्कि व्यक्ति में सामाजिक गुणों का विकास करती है। भारत की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु वैदिक सनातन ज्ञान परंपरा एवं वर्तमान ज्ञान को एकीकृत करना अति आवश्यक है। सनातन ज्ञान परंपरा में चरित्र निर्माण व अध्यात्म की शिक्षा गुरूकुलों में आचार्यों द्वारा प्रदान की जाती थी परन्तु वर्तमान में चरित्र, नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा का लोप हो रहा है। इसलिये निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि वर्तमान शिक्षा को सुदृढ़ता प्रदान करने व भारत को विश्वगुरू बनाने के लिए वर्तमान आचार्यों को सनातन वैदिक आचार्यों की आदर्श जीवन शैली, उच्च चिंतन, आध्यात्मिक व नैतिक ज्ञान, चरित्र निर्माणकारी शिक्षा को आत्मसात करना चाहिए। वैदिक शिक्षा भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार है, जिसका उच्च आदर्श वर्तमान आचार्यों के लिये पथ प्रदर्शक होगा। सत्यपूर्ण एवं वैज्ञानिकता के आधार पर ही हम भारतीय ज्ञान परंपरा को सुचारू रूप से आगे बढ़ा सकते हैं, जिससे आगामी पीढ़ी गौरव का अनुभव करेगी।

संदर्भ सूची

झा कन्हैया (2022). शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता, दैनिक जागरण संपादकीय आलेख, नोएडा एनआईओएस (उ0प्र0)।
त्रिवेदी, राकेश (2014). भारतीय शिक्षा का इतिहास, ओमेगा पब्लिकेशन (दरियागंज), नई दिल्ली।
पाण्डेय, रामशकल (2012). भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास।
गुप्ता, एस0पी0 (2008). भारतीय शिक्षा का विकास तथा समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
सिंह, डा0 ओ0पी0 (2008). शिक्षा का दार्शनिक आधार, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
मालवीय, डा0 राजीव, (2006). शिक्षा दर्शन एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
किशोर, देवराज नन्द (1999). भारतीय दर्शन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ।
शर्मा, चन्द्रधर (1995). पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, दिल्ली।
चटर्जी एवं दत्त (1989). भारतीय दर्शन, पी0बी0 प्रकाशन पटना।
निगम, शोभा (1977). पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, दिल्ली।
चौबे, सरयू प्रसाद (1975). भारतीय शिक्षा दर्शन, द मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
wikipedia.org/wiki/Hkkjrh;_Kku_ijEijk
wikipedia.org/wiki/Hkkjrh;_f'k{kk_dk_bfrgkl
indiaeducation/shiksha/hindi/izksQkby